"यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे।वह जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है, मुझसे प्रेम करता है। जो मुझमें प्रेम रखता है उसे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। मैं भी उसे प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।"योहन १४:१८-२३

संत युद येसु एक दिलचस्प सवाल करते हैं 'ऐसा कैसे हो सकता है कि येसु खुद को विश्वासियों के लिए ज़ाहिर करें और फिर भी दुनिया से छुपे रहें?'इसका जवाब देते हुए येसु वचन कि तरफ इशारा करते हैं.येसु ने जबसे अपना प्रचार का काम सार्वजनिक रूप से शुरू किया,तबसे उनके सच्चे श्रोताओं ने उनकी बातों में अपार शक्ति और विवेक पाया- क्यूंकि प्रभु को स्वयं परमेश्वर ने भेजा है और वे उनका प्रतिरूप हैं. पेंटेकोस्ट के बाद शुरुआत की कलीसिया शिष्यों के साथ नियमित संपर्क में थी क्यूंकि शिष्य येसु के साथ थे.शिष्यों द्वारा लोगों ने ईश्वर के शब्दों को सुना, क्रिस्त ने अपने बारे में जिन बातों का खुलासा किया था और पवित्र आत्मा कि प्रेरणा को सुना।आज भी कलीसिया इसी तरह और इसी वजह से साथ आती है. धन्य जॉन पॉल II ने लिखा था 'कलीसिया प्रभु के वचन को निरंतर सुनती और पढ़ती है और भक्ति के साथ उनके जीवन के हर पहलु को फिर जोड़ने कि कोशिश करती है'

जीसस यूथ होने के नाते हम रोज़ बाइबिल द्वारा प्रभु के वचन को पढ़ते हैं। ऐसा करते हुए हम कलीसिया के साथ हो जाते हैं जो प्रभु के चरणों में बैठे हुए प्रभु को सुन रही है.हम यह भी जानते हैं कि वचन को सिर्फ पढ़ना काफी नहीं, प्रभु के कहे अनुसार वचन पर जीना (ग्रीक tereo) भी है. वचन में जो खुलकर हमारे सामने आता है,उसके प्रति हमारी पूरी सम्मति देना ज़रूरी है.प्रभु जो ज़ाहिर करते हैं वो सिर्फ कुछ ख्याल नहीं हैं; प्रभु अपने आप को ज़ाहिर करते हैं इसलिए उसके जवाब में हमें भी खुद को पूरी तरह दे देना है. इस प्रकार प्रभु-त्रित्व ईश्वर के साथ हमारा रिश्ता और सुन्दर बन जाता है और ईश्वर खुद को पूरी तरह हमारे लिए ज़ाहिर करते हैं. संत यूद के सवाल के जवाब में प्रभु यही आश्वासन देते हैं. हमें आमंत्रण है कि हम अपने मन और वचन को पढ़ने और उसपर जीने कि प्रतिज्ञा को फिरसे ताज़ा करें।